

डॉ. मार्व विल्सन, भविष्यवक्ता, सत्र 8, योना

© 2024 मार्व विल्सन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यवक्ताओं पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह योना की पुस्तक पर सत्र 8 है।

इस सप्ताह की शुरुआत करते हुए, हम स्वीकार करते हैं कि हमें आपकी कितनी आवश्यकता है, हमारे प्रभु। हम प्रार्थना करते हैं कि इस पूरे दिन के दौरान हम आपके मूल्यों के अनुरूप रहें, यह जानते हुए कि आपकी उपस्थिति हमारे साथ बनी हुई है। जब हम आपको स्वीकार नहीं करते हैं, तब भी हम आपका धन्यवाद करते हैं कि आप हमारे करीब रहते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर का वचन जिसका हम अध्ययन करते हैं, हमेशा हमारे मार्ग के लिए मार्गदर्शक बने, हमें अपनी भावनाओं पर भरोसा न करने में मदद करें, जो कि यो-यो की तरह हैं, बल्कि हमें पवित्रशास्त्र पर भरोसा करने में मदद करें, जो कि परमेश्वर का शाश्वत वचन है।

जैसे-जैसे हमारे आस-पास की चीजें टूटती जा रही हैं, क्षणभंगुर, क्षणभंगुर और गुज़रती जा रही हैं, प्रार्थना करें कि हम सीखें कि वास्तव में आप और आपके वचन से ज़्यादा ठोस और भरोसेमंद कुछ भी नहीं है। इसलिए, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आज हमें उस वास्तविकता में नए सबक दें, हमारे प्रभु मसीह के माध्यम से। आमीन।

ठीक है, आज मैं योना और भविष्यवाणी से संबंधित कुछ पृष्ठभूमि सामग्री के बारे में अपना अध्ययन जारी रखना चाहता हूँ। योना को अमितै का पुत्र बताया गया है, जिसका उल्लेख 1:1 में किया गया है। हम अमितै के बारे में कुछ नहीं जानते। हम जानते हैं कि योना कब रहते थे, इसलिए हम मानते हैं कि ऐतिहासिक भविष्यवक्ता, कम से कम 2. किंग्स 14:25 के अनुसार, उसे इस्राएल के राजा यारोबाम द्वितीय के शासनकाल में रखता है।

मैं अभी वह पाठ पढ़ूंगा, 2. राजा 14:25. इसमें कहा गया है कि यारोबाम ने इस्राएल की सीमाओं को फिर से स्थापित किया, और उसने कई सीमाएँ बताईं, जिनका मैं ज़िक्र नहीं करूंगा, इस्राएल के परमेश्वर यहोवा के वचन के अनुसार, जो अमितै के पुत्र, गथेफर के भविष्यवक्ता योना के द्वारा उसके सेवक द्वारा कहा गया था। अब गथेफर वह छोटा सा शहर है, जो नासरत से थोड़ी ही साइकिल की सवारी पर है, और आप यहाँ गथेफर को ठीक ऊपर, गलील की झील के पास देख सकते हैं। तो, यह गथेफर है।

आज, अगर आप गलील में हैं, तो आप उस शहर के लिए पारंपरिक तरीके से जा सकते हैं। मैंने एक और अवलोकन किया कि योना और यीशु में एक बात समान थी। वे दोनों ज़ेबुलुन के आदिवासी क्षेत्र में पले-बढ़े थे।

अब, हम जबूलून और नप्ताली की ओर लौटते हैं, जब हम यशायाह की एक भविष्यवाणी के बारे में बात करते हैं, जो इस क्षेत्र के बारे में बात करती है कि यह वह क्षेत्र है जहाँ प्रकाश चमकने वाला है। और जैसा कि आप जानते हैं, मैथ्यू के सुसमाचार में, मैथ्यू बताते हैं कि यह चमकने का कारण यह है कि यह वह क्षेत्र था, गलील का क्षेत्र, जहाँ यीशु ने अपना अधिकांश समय बिताया

था। पिछली पीढ़ियों में, यानी, योना की पीढ़ी में, यह बहुत अंधकार का समय था क्योंकि वह सैन्य बादल उस क्षेत्र पर मंडरा रहा था, और वह आगे बढ़ने वाला था।

क्योंकि अगर हम यारोबाम को इन 40 सालों यानी 793-753 के आसपास की तारीख दें, तो यारोबाम किस महान घटना से लगभग 30 साल पहले आता है? पुराने नियम के इतिहास की दूसरी सबसे महत्वपूर्ण तारीख। महान। सामरिया का विनाश और उत्तरी जनजातियों का असीरियन साम्राज्य के सुदूर इलाकों में निर्वासन।

तो वह बादल वहाँ था और अशूरियों ने आगे बढ़ना शुरू कर दिया। उन्होंने तिग्लथ-पिलेसर III के तहत यारोबाम द्वितीय के ठीक बाद निर्वासन नीति शुरू की, जिसने उत्तरी राज्य से नागरिकों को हटा दिया और मूर्ति पूजा करने वाले अशूरियों को उस क्षेत्र में लाया। उन्होंने अंतर्जातीय विवाह करना शुरू कर दिया और यही कारण है कि आपको यीशु के दिनों में सामरी समस्या है।

यरूशलेम के पारंपरिक यहूदियों का मिश्रित धर्म के लोगों के साथ सामाजिक मेलजोल नहीं था। देखिए, वे बहुत अलगाववादी थे और इसीलिए जॉन 4 में यह सवाल उठाया गया कि एक यहूदी यीशु का सामरिया की एक महिला के साथ किसी तरह का सामाजिक संपर्क क्यों होगा। तो, यह सारी समस्या वास्तव में 8वीं शताब्दी के दौरान शुरू हुई क्योंकि इज़राइल की भूमि के बाहर के लोग यहाँ आकर बस गए और सामरिया के क्षेत्र को बहुत संदिग्ध माना जाने लगा, खासकर पारंपरिक यहूदियों द्वारा।

ठीक है, तो योना, जाहिर तौर पर 2 राजाओं के इस पाठ के आधार पर, उसे हमारे तीन भविष्यद्वक्ताओं में से एक के रूप में पाता है जिसे हम उत्तरी राज्य से जोड़ते हैं। त्वरित समीक्षा: योना उत्तरी राज्य से विदेशी मिशनरी था, जिसने इराकी एयरलाइंस पर टिकट बुक करने के लिए मोसुल जाने के लिए पूर्व की ओर जाने के लिए कहा था। वह यहाँ निनवेह के क्षेत्र में जा रहा था, ठीक यहाँ आधुनिक इराकी शहर मोसुल, मोसुल के पास।

ठीक है, लेकिन वह भूमध्य सागर के खुले समुद्र की ओर चला गया, और उसका गंतव्य पश्चिम था। पश्चिम की ओर जाओ, नौजवान, पश्चिम की ओर जाओ। बस इतना ही।

इसलिए, उनके मन में एक अलग दिशा थी। मैं निनवे राष्ट्र के बारे में अधिक विशिष्ट विवरण में बात करूँगा। आरंभ करने के लिए, पुराने नियम में कौन सी पूरी पुस्तक निनवे शहर को समर्पित है? नहूम या नहूम, यह सही है।

और तथाकथित दयालु, सांत्वना देने वाले नबी द्वारा वर्णित निनवे शहर, नहूम का यही मतलब है। छत के आसपास दिलचस्प और अजीबोगरीब, थोड़ा आधुनिक अलग जब आप ब्रॉडवे पर एक पुरस्कार विजेता संगीत के साथ आते हैं, और आप एक भिखारी के लिए एक अच्छा नाम लेकर आना चाहते हैं, तो वह भिखारी जो अपना हाथ बाहर निकाले खड़ा है, उसका नाम नहूम भिखारी है। लोगों को उनके नाम से पहचानने का आह्वान करते हुए, दयालु बनें, दयालु बनें, दयालु बनें, सांत्वना देने वाले बनें, यशायाह 40, 41 है नहुमु, नहुमु अमी। सांत्वना दो, सांत्वना दो, मेरे लोगों। सेप्टुआजेंट में, यह पैराकेलियो है, जिसे आप नए नियम में जानते हैं, पैराक्लीट वह है जिसे

शाब्दिक रूप से सांत्वना देने वाले, सहायक, वकील, वकील, परामर्शदाता के साथ बुलाया जाता

ठीक है, तो नहूम न्याय के लिए एक परिपक्व शहर बन गया, क्योंकि सन्हेरीब ने लगभग 700 ईसा पूर्व इसे अपनी राजधानी बनाया था।

और योना के दिनों के सौ साल से कुछ ज़्यादा समय बाद, असीरियन साम्राज्य का वह शहर गिर जाएगा। अब, योना की किताब कई तरह की व्याख्याओं के अधीन रही है। बाइबल की कुछ ऐसी किताबें कौन सी हैं जिनकी व्याख्या करने के सबसे अलग-अलग तरीके हैं? क्या आप किसी और के बारे में सोच सकते हैं? योना के बारे में विद्वानों ने तीन या चार अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाए हैं।

क्या आप बाइबल में किसी और ऐसे अध्याय के बारे में सोच सकते हैं जो सामान्य रूप से समस्या पैदा कर सकता है? यह सिर्फ पुराने नियम में ही नहीं होना चाहिए। शायद उत्पत्ति के पहले दो अध्याय, यह पक्का है। मुझे अध्याय 3 या शायद 1 से 11 के बाद के बारे में पक्का पता नहीं है।

1 से 11 प्रागैतिहासिक, पितृसत्तात्मक से पहले का इतिहास है, और वंशावली, विज्ञान और शास्त्र में बहुत सारे अंतर आपस में टकराते हैं। लोगों के पास पतन और पतन के प्रभावों और क्या पतन इतिहास है, रूपक है, या उद्धारकर्ता के वादे की घोषणा करने के बारे में एक गहन बिंदु है, इस पर अलग-अलग विचार हैं। यहां तक कि मेल गिब्सन ने भी उत्पत्ति 3 का एक टुकड़ा लिया, जहां आप देखते हैं कि फिल्म की शुरुआत में वह पैर सर्प के सिर पर आता है और उसे कुचल देता है।

लोग व्याख्या के बारे में किन अन्य पुस्तकों पर बहस करते हैं? सभोपदेशक एक और अच्छी पुस्तक है। वास्तव में, कुछ लोगों के अनुसार, सभोपदेशक इतना निंदक, इतना सांसारिक, इतना उदासी भरा है कि इसे पाना वाकई मुश्किल है। यह निश्चित रूप से अत्यधिक धार्मिक नहीं है, लेकिन यह कई अलग-अलग सारगर्भित छोटी-छोटी कहावतों से बना है, लगभग कुछ कहावतों की तरह।

लेकिन इसमें इतना कुछ है कि लेखक के जीवन के प्रति उदासीनता की बात की जा सकती है। इसमें कुछ भी नया नहीं है। इसे पढ़ते समय यह सिर्फ एक अच्छा अनुभव नहीं लगता, बल्कि यह एक तरह से निराशाजनक अनुभव है।

और व्याख्याकारों या बाइबल पाठकों में हमेशा यह प्रवृत्ति होती है कि वे इसे ठीक करना चाहते हैं। शास्त्र आपको खुश महसूस कराना चाहिए। लेकिन वास्तव में, आप जानते हैं, एक बिशप स्टुअर्ट ब्लैच हैं, वे अब बिशप नहीं हैं, लेकिन हमारे पास लाइब्रेरी में सभोपदेशक पर उनकी किताब है।

वह सभोपदेशक के प्रति बिल्कुल अलग दृष्टिकोण रखते हैं, हालांकि यह कोई बेहतर किताब नहीं है। उनका कहना है कि अगर आप किसी को बाइबल पढ़ना शुरू करवाना चाहते हैं, तो प्रवेश द्वार, वह स्थान जहाँ आप उन्हें शुरू करने के लिए कहते हैं, वह सभोपदेशक है। उनका दावा है कि सड़क पर आपको आम आदमी यहीं मिलेगा।

वे ईश्वर पर संदेह कर रहे हैं, उन्हें जीवन से संघर्ष करना पड़ रहा है, वे मानव अस्तित्व के पैटर्न से थक चुके हैं, उन्होंने जीवन में खुद को खुश रखने के लिए सब कुछ आजमाया है, महिलाएँ, पार्क, संगीत, संपत्ति, और फिर भी वे हेबेल / हेवेल हैं। हेबेल वह है जिसका उपयोग सभोपदेशक करते हैं; यह वह है जिसे आप ठंडी सुबह में सांस लेते हैं; यह क्षणभंगुर है, यह है और यह चला जाता है; यह अल्पकालिक है; यह व्यर्थ या अर्थहीन है। और इसलिए, औसत व्यक्ति जीवन से निराश है।

वे जीवन के उद्देश्य और अर्थ की तलाश कर रहे हैं। इसलिए, उन्हें उस समय बाइबल में लाने के लिए, वे उससे जुड़ सकते हैं। यदि आप उन्हें बाइबल के सबसे उच्च धार्मिक भागों या बाइबल के उन भागों में भेजते हैं जो ईश्वर की पवित्रता के बारे में बात करते हैं, तो यह किसी ऐसे व्यक्ति के लिए थोड़ा सा थोपने वाला हो सकता है जो सिर्फ सवाल पूछ रहा है: यह ईश्वर कौन है? और, बेशक, कोहेलेत ने पुस्तक के अंत में जब ईश्वर से डरने की बात की तो बादलों के पीछे से सूरज को थोड़ा सा झांकने का कारण बना दिया। यह मनुष्य का पूरा कर्तव्य है: अपनी युवावस्था के दिनों में अपने निर्माता को याद रखें क्योंकि आप बहुत, बहुत जल्दी इस जीवन से बाहर हो जाते हैं, और इसलिए, अंततः ईश्वर ही जीवन का महान एकीकरणकर्ता है, उससे डरना, यही जीवन का वास्तविक अर्थ है, लेकिन वह इस पर जोर नहीं देता है, इसके बारे में बहुत बात नहीं करता है, ज्यादातर वह जीवन के संघर्षों के बारे में बात करता है।

मेरा एक मित्र है जिसने अपने जीवन का पहला पाठ सभोपदेशक से चुना है; शराब हँसी के लिए बनी है और पैसा हर चीज़ का जवाब देता है, सभोपदेशक की एक आयत का संशोधित मानक संस्करण दिखाता है कि आप बाइबल से जो चाहें साबित कर सकते हैं। ठीक है, यह वास्तव में एक संघर्षपूर्ण पुस्तक है, कोई अन्य लोग स्वयंसेवक बनना चाहते हैं? खैर, इस बात की जानकारी प्राप्त करें कि यशायाह के पाई में कितने हाथ हैं, हाँ, मेरे पास एक प्रोफेसर थे, एडवर्ड जे. यंग उनका नाम है, जो इस परिसर में एक वार्षिक व्याख्यान देने आए थे जो क्रेडिट के लिए था जब मैं सेमिनरी में था, उन्होंने सिनसिनाटी में हिब्रू यूनिन कॉलेज के एक प्रोफेसर द्वारा यशायाह में उस पाठ्यक्रम के लिए एक पाठ्यपुस्तक सौंपी, इसे शेल्डन ब्लैक कहा गया, शेल्डन ब्लैक मैं पुस्तक की एकता के बारे में सोचना पसंद करता हूँ, और जबकि यशायाह इसकी रचना और संभावनाओं के लिए खुला है, निर्वासन में एक और नबी हो सकता है, ड्यूटेरो -यशायाह, या दूसरा यशायाह जैसा कि उसे कभी-कभी कहा जाता है, नबी के दिनों से यशायाह, जिसने निर्वासितों से एक नबी के रूप में बात की थी, हम उस विशेष दृष्टिकोण के पक्ष और विपक्ष में कुछ तर्कों के बारे में बात करेंगे।

इस बात में कोई संदेह नहीं है कि पुस्तक का दूसरा भाग बेबीलोन के निर्वासन के खत्म होने की बात कहता है। और इसलिए, इसकी व्याख्या कैसे की जाती है, एकता की स्थिति, या संभवतः यशायाह स्वयं भविष्य में वापसी की उस अवधि के बारे में बात कर सकता है, क्योंकि यशायाह स्वयं बेबीलोन के निर्वासन से कुछ शताब्दियों पहले था। प्रकाशितवाक्य, बेशक, एक बहुत ही कठिन पुस्तक है, जहाँ लोग हमेशा व्याख्या पर सहमत नहीं हो सकते हैं।

कुछ लोग इसे यथासंभव शाब्दिक रूप से लेते हैं, कुछ इसे यथासंभव आलंकारिक रूप से लेते हैं, या यथासंभव आदर्शवादी रूप से लेते हैं, और व्याख्या का एक स्कूल है जो मूल रूप से कहता

है कि ईश्वर जीतता है, और अन्य सभी विवरण अप्रासंगिक हैं। इसलिए, यदि आप व्याख्या के साथ संघर्ष नहीं करना चाहते हैं, तो इसे चुनें। मुझे लगता है कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक से और भी बहुत कुछ प्राप्त किया जा सकता है।

लेकिन ये कुछ अच्छी बातें हैं। बाइबल का एक और कठिन हिस्सा आखिरी नौ अध्याय हैं, जहाँ यह निश्चित रूप से यहजेकेल के भविष्यवक्ताओं में है। यह व्याख्या करने के लिए एक बहुत ही कठिन मार्ग है।

यह किसी प्रकार के भविष्य के मंदिर के बारे में बात करता है, और भगवान इसके बीच में हैं, और यहजेकेल की पुस्तक में अंतिम शब्द यहोवा शम्मा है, भगवान अपने लोगों की उपस्थिति में वहाँ हैं। लेकिन अगर आप इसे शाब्दिक रूप से दबाते हैं, तो भूमि में कुछ बहुत बड़े भौगोलिक और भौतिक परिवर्तन की आवश्यकता है। कुछ लोग इसे भविष्य के मंदिर, एक प्रतीकात्मक मंदिर के आदर्श के रूप में लेते हैं, जिसे कभी भी शाब्दिक रूप से समझने का इरादा नहीं था।

इसलिए, हमारे पास बाइबल के कुछ हिस्से हैं जो व्याख्याकारों के लिए कठिन हैं, और इनमें से कुछ चीजों के बारे में हमें कई दृष्टिकोण, उनकी ताकत और कमजोरियों को बताना होगा। इससे आपको पवित्रशास्त्र में अपने विश्वास को कम नहीं करना चाहिए, लेकिन इससे हमें कभी-कभी पवित्रशास्त्र को समझने के तरीकों के बारे में सोचना चाहिए। मैंने आपको जो सिद्धांत दिया है, उस पर वापस जाते हुए, पवित्रशास्त्र जो कहता है और मुझे लगता है कि उसका क्या मतलब है, उसके बीच अंतर हो सकता है।

यह हमेशा कुछ ऐसा है जो प्रतिदिन संशोधन के लिए खुला रहता है। क्यों? क्योंकि मैं अध्ययन कर रहा हूँ, आप अध्ययन कर रहे हैं, हम सीख रहे हैं, हम बढ़ रहे हैं। पुरातत्व नई चीजों के साथ आ रहा है।

भाषाई अध्ययन हमें बाइबल के लिए नई पांडुलिपि पढ़ने के साथ चुनौती दे रहे हैं, और हमें यहाँ-वहाँ सुधार करने में मदद कर रहे हैं। जब मैं सेमिनरी गया, तो मैं एक ऐसी बाइबल लेकर गया जिसमें डेड सी स्क्रॉल की कोई भी रीडिंग नहीं थी। अब, मैं छात्रों को जो भी बाइबल पढ़ने के लिए चुनता हूँ, उसमें जगह-जगह बिखरे हुए स्थान हैं, विशेष रूप से पुराने नियम की पुस्तकें, जहाँ हमने विभिन्न स्थानों पर बिखरे हुए रीडिंग में सुधार किया है।

क्योंकि अब डेड सी स्क्रॉल का प्रकाशन, जिनमें से कुछ का प्रकाशन विद्वानों के अंदरूनी झगड़े और ईर्ष्या और कुछ विद्वानों के काम करने के तरीके की धीमी गति के कारण बहुत देरी से हुआ। कुछ दशकों और दशकों तक काम करते रहे, और यह मेरा है, आप मेरे कंधे पर नज़र नहीं रखेंगे, मैं इसे पहले प्रकाशित करने का सम्मान चाहता हूँ, और इसलिए वे बहुत, बहुत धीमी गति से आगे बढ़ते हैं। इसलिए, कई कारण हैं कि हमें व्याख्या के साथ समस्या क्यों है।

बस बहुत संक्षेप में, कुछ तरीके जिनसे इस पुस्तक को समझा गया है। खास तौर पर जब पुराने नियम को उच्च आलोचनात्मक, पवित्रशास्त्र के अधिक वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उजागर किया गया, जो बाइबल को साहित्य के एक कार्य के रूप में देखता है, न कि पवित्रशास्त्र, परमेश्वर के

वचन के रूप में। और जब पवित्रशास्त्र पर कुछ प्रक्रियाओं को लागू किया जाता है, तो इनमें से कई तर्कसंगत सोच की पूर्वधारणा से किए जाते हैं।

अलौकिक या दैवीय की संभावना को खारिज करना। और इसलिए, कुछ निष्कर्ष, जहां आप शुरू करते हैं वह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रभावित करता है कि आप कहां समाप्त होते हैं। धर्मशास्त्र की दो महान पूर्वधारणाओं को याद रखें: ईश्वर मौजूद है, और उसने खुद को प्रकट किया है।

यहीं से हम बाइबल अध्ययन का अध्ययन शुरू करते हैं। अब, योना की पुस्तक को स्कैन करने में कुछ विद्वानों की आपत्तियों के संदर्भ में, बड़ी मछली जैसी चीजें हमेशा लोगों के लिए एक बाधा होती हैं। अन्य लोगों को इस बात से कुछ समस्याएँ हैं कि कैसे एक पूरा शहर एक आने वाले प्रचारक के संदेश पर इतनी जल्दी प्रतिक्रिया दे सकता है, और उनमें से बहुत से लोग व्हाइट हाउस से लेकर औसत लैरी लेमैन तक पश्चाताप में प्रतिक्रिया देते दिखते हैं।

पूरे देश में, ऊपर से नीचे तक, सत्ता के मामले में। राजा ने उपवास की घोषणा की। और इस तरह यह बहुत ही कम समय में इस्राएल के वाचा परिवार के बाहर कई, कई मूर्तिपूजक लोगों का एक उल्लेखनीय रूपांतरण था।

क्या ऐसा कुछ हुआ होगा? ये उन कई सवालों में से सिर्फ़ दो हैं जो विद्वानों ने किताब के बारे में उठाए हैं। इसका नतीजा यह हुआ है कि कुछ लोगों ने किताब को काल्पनिक रूप से पढ़ा है, इसलिए वे इसे किसी भी तरह से जीवनी, किसी व्यक्ति की कहानी के रूप में नहीं पढ़ते हैं, जो वास्तव में हुआ था, बल्कि वे इसे मुख्य रूप से एक नैतिक शिक्षा देने के लिए कही गई एक छोटी कहानी के रूप में देखते हैं। और यही तो कल्पना है।

और यहाँ, नैतिकता का आविष्कार किया गया है। और इस पौराणिक चरित्र की गतिविधियाँ, वह अज्ञात है, कुछ चमत्कारी तत्वों और अनुभवों के साथ, शायद उत्तर की ओर कुछ पहले के भविष्यवक्ताओं से उधार ली गई हैं जिन्होंने काम किया। वे दो भविष्यवक्ता कौन थे जो शास्त्र का एक बड़ा हिस्सा लेते हैं? एलिय्याह और एलीशा के पास चमत्कारी चीजें थीं।

वास्तव में, एलीशा के बारे में लगभग बारह चमत्कारों का श्रेय दिया जाता है। इसलिए युवाओं की यह कल्पना यह मानती है कि शायद इनमें से कुछ चमत्कारी तत्व और अनुभव समानांतर खातों से उधार लिए गए थे और योना पर लागू किए गए थे। मुझे इस बात से कुछ गंभीर समस्याएँ हैं कि यह कल्पना है।

जिसके कारण मैं एक मिनट में बताऊंगा। एक रूपकात्मक दृष्टिकोण है, जो योना की कहानी को एक विस्तारित रूपक के रूप में देखता है जिसमें कहानी के कुछ विवरण आध्यात्मिक रूप से इस्राएल के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। जैसे कि कुछ विद्वान आपको बताते हैं कि इस्राएल को जंगल का अनुभव था, वैसे ही यीशु को भी जंगल का अनुभव था।

इस्राएल जंगल से बाहर आता है और पानी से होकर जाता है और इसलिए यीशु को बपतिस्मा का अनुभव होता है। और फिर इस्राएल को पहाड़ पर शिक्षा मिलती है और इसलिए यीशु पहाड़ पर

अपनी शिक्षा देते हैं। और इसलिए, इस्राएल के जीवन में सामूहिक रूप से कुछ समानताएँ हैं जो अब इस्राएली अनुभव में प्रतिध्वनित होती हैं।

योना इस पुस्तक को समझने के इस रूपकात्मक तरीके से इज़राइल का प्रतिनिधित्व करता है। इस दृष्टिकोण को मानने वाले बहुत से लोग कहेंगे कि यह पुस्तक 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व से बहुत बाद की है और संभवतः यह पुस्तक वास्तव में निर्वासन के बाद की अवधि में लिखी गई है। पुस्तक इसलिए लिखी गई क्योंकि रूपकात्मक दृष्टिकोण आमतौर पर आपको बताएगा कि बड़ी मछली की पहचान बेबीलोन से की जाती है जिसने इज़राइल को लगभग 70 वर्षों तक निगल लिया।

और बेबीलोन के निर्वासन के अनुभव के बाद, जहाँ इस्राएल को बंदी बनाकर रखा गया था, योना में मछली में तीन दिनों की कैद के कारण योना को उल्टी हुई और वह उस सूखी भूमि पर आया जो निर्वासन से वापसी का प्रतीक है। तो यह एक तरीका है जिससे विद्वानों ने पुस्तक के प्रति एक रूपकात्मक दृष्टिकोण देखा है। दूसरों ने पुस्तक के लिए दृष्टांत शब्द का इस्तेमाल किया है।

मुझे लगता है कि यह कई कारणों से थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है। परवल्यिक दृष्टिकोण निश्चित रूप से रूपक दृष्टिकोण से काफी मिलता-जुलता है, लेकिन यह रूपक दृष्टिकोण से कहीं अधिक सरल है। इसका उद्देश्य आध्यात्मिक शिक्षा देना है।

दृष्टांतवादी दृष्टिकोण में कम से कम एक मुख्य बिंदु है। जो लोग कहानी को दृष्टांत के रूप में देखते हैं, वे अक्सर इस पुस्तक को निर्वासन के बाद के लेखन के रूप में देखते हैं। निर्वासन के बाद के इस दृष्टांत का प्राथमिक बिंदु उस अनन्यवादी राष्ट्रवाद के खिलाफ विरोध करना है जो ईश्वरीय कृपा के सार्वभौमिक आयाम को प्रकट करने में विफल रहा।

इसलिए, यदि आप अनन्य राष्ट्रवाद का विरोध कर रहे हैं, और यहाँ एक भविष्यवक्ता है जो ईश्वर के अंतर्राष्ट्रीय प्रेम को दिखाने के लिए पूर्व की ओर जाता है, तो विद्वान कहेंगे कि दृष्टांत का उद्देश्य यह सिखाना है कि ईश्वर हर जगह के लोगों से प्रेम करता है और उन्हें अंतर्राष्ट्रीय नैतिकता के लिए बुलाता है। जबकि इस दृष्टांतवादी दृष्टिकोण का प्राथमिक बिंदु अनन्य दृष्टांत का विरोध करना है, यह फिर से मानता है कि कहानी इजरायल के इतिहास के निर्वासन के बाद की अवधि से निकलती है। इसे देखने में सबसे बड़ी समस्याओं में से एक साहित्यिक विवरण है।

क्या कोई मुझे बाइबल में ऐसा कोई दृष्टांत बता सकता है जो तीन या चार अध्यायों का हो? यह निश्चित रूप से एक दृष्टांत है, इसे दृष्टांत के रूप में देखना सबसे मुश्किल काम है। कहानी की लंबाई और कथा की जटिलता, इन सभी को एक सरल पाठ में समेटना। अब हेर्मेनेयुटिक्स और बाइबल व्याख्या के संदर्भ में, अगर आप सुसमाचारों में उनका अध्ययन करते हैं, तो दृष्टांत शैली के बारे में आप जो पहली चीज़ सीखते हैं, वह यह है कि दृष्टांत से उठकर चारों पैरों पर चलने के लिए न कहें।

अगर आप दृष्टांत के बहुत ज़्यादा विवरण पर ज़ोर देते हैं तो आप बड़ी मुसीबत में पड़ सकते हैं। इसलिए, दृष्टांत में मुख्य विचार को देखें। यह अच्छी सलाह है, हर मुख्य शब्द या विचार में महत्व की तलाश करने के बजाय।

ऐतिहासिक रूप से, योना की कहानी को समझने में ऐतिहासिक दृष्टिकोण को बरकरार रखा गया है। मैं कहता हूँ कि इसे बरकरार रखा गया है क्योंकि यहूदी और ईसाई दोनों समुदायों में, तर्कवाद के उदय तक, पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक, वैज्ञानिक अध्ययन के उदय तक, आधुनिक युग से पहले, पारंपरिक दृष्टिकोण ही था कि पुस्तक को कैसे समझा जाता था। और इसलिए योना को एक वास्तविक ऐतिहासिक चरित्र के रूप में देखा जाएगा, जो संभवतः यारोबाम द्वितीय के समय की अवधि से आता है।

यदि वह गथ-हेफ़र से आता है, तो हम जानते हैं कि वह एक गैलीलियन भविष्यवक्ता है। और अलौकिक घटनाएँ शास्त्र की कथा के लिए घृणित नहीं हैं। वे मूसा के जीवन में पहले से ही प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं, जिसने जलती हुई झाड़ियों का अनुभव किया, जिसने अनुभव किया, उस चीज़ को अपने हाथ में लो और उसे नीचे फेंक दो, फिर उसे उठा लो।

मूसा के जीवन में 40 साल तक जंगल में हर दिन चमत्कार होता रहा, जिससे लोगों का एक समूह शिकायत करता रहा। मन्ना एक चमत्कार था। चट्टान से पानी का आना एक चमत्कार था।

पुराने नियम के सबसे महान भविष्यवक्ता मूसा से जुड़ी कई बातें अलौकिक थीं। और जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, दो भविष्यवक्ता एलिय्याह और एलीशा, दोनों ही कुछ असाधारण घटनाओं से जुड़े थे। इसलिए, योना की कहानी में, हम देखते हैं कि परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया।

भगवान एक मछली तैयार करते हैं। भगवान एक मछली तैयार करते हैं। भगवान मछली से बात करते हैं।

भगवान एक पौधा भेजते हैं। भगवान उस पौधे पर हमला करते हैं। और इस विशेष कहानी में भगवान के हस्तक्षेप को कई चीज़ों के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है।

जो लोग इस पुस्तक की ऐतिहासिक व्याख्या करते हैं, वे अक्सर इस बात की ओर इशारा करते हैं कि नए नियम में योना, भविष्यवक्ता के साथ कैसा व्यवहार किया गया, उसके साथ कैसा व्यवहार किया गया या उसे किस तरह से समझा गया। और आपको नए नियम में क्या मिलता है? खैर, वह पहला अंश, मत्ती अध्याय 12, श्लोक 39 और उसके बाद। कुछ फरीसी और व्यवस्था के शिक्षकों ने यीशु से कहा, गुरु, हम आपसे एक चमत्कारी चिन्ह देखना चाहते हैं।

और उसने उत्तर दिया कि दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चमत्कारी चिन्ह मांगती है। लेकिन नबी योना के चिन्ह के अलावा कोई चिन्ह नहीं दिया जाएगा। क्योंकि जैसे योना तीन दिन और तीन रात बड़ी मछली के पेट में था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के गर्भ में रहेगा।

निनवे के लोग न्याय के समय इस पीढ़ी के साथ खड़े होंगे और इसकी निंदा करेंगे क्योंकि उन्होंने योना के उपदेश पर पश्चाताप किया था। पहले अंश में जो कुछ है वह स्पष्ट रूप से निनवे शहर के लोगों के वास्तविक पश्चाताप का संदर्भ है, जहाँ योना गया था। और यीशु ने उस छोटे से अंश को यह कहकर समाप्त भी किया कि अब योना से भी बड़ा कोई यहाँ है।

क्या यीशु खुद की तुलना किसी प्रेत से करेंगे? किसी ऐसे काल्पनिक चरित्र से जो कभी अस्तित्व में ही नहीं था? यीशु ने अपनी मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान की तुलना करते समय योना की कहानी को ऐतिहासिक माना। चूँकि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी के मध्य में तीन दिन और तीन रातें बितानी होंगी, इसलिए वह अपनी मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान की तुलना योना के अनुभव से करता है। मत्ती 12:40. अगर कोई यह मान ले कि यीशु ने अपने श्रोताओं को एक बात समझाने के लिए अपने समय में प्रचलित किसी लोकप्रिय कहानी के विवरण का इस्तेमाल किया है, तो कई लोग तर्क देंगे कि यीशु का अधिकार दांव पर लग सकता है, बशर्ते तुलना का एक पक्ष काल्पनिक हो और दूसरा इतिहास में निहित हो।

इसके अलावा, अगर वह वास्तव में अपनी पीढ़ी को चाहता है, जिसे यीशु उनकी कठोरता और उदासीनता के साथ चुनौती दे रहा है, जब तक कि नीनवे का पश्चाताप, जिसकी ओर यीशु इशारा करते हैं, वास्तव में समय और स्थान में नहीं हुआ, तब उसका अपनी पीढ़ी से पश्चाताप करने की अपील, सबसे अच्छे रूप में, संदिग्ध विश्वसनीयता रखती प्रतीत होगी। योना की पुस्तक का उद्देश्य दो संभावित मुख्य उद्देश्यों का सुझाव देना है। एक जिस पर मैंने पहले ही चर्चा की है, वह है परमेश्वर का अंतर्राष्ट्रीय प्रेम।

अब, यह पुराने नियम में एक महत्वपूर्ण विषय है। यह प्रभु की निजी प्रशंसा नहीं है। यह इस्राएल और परमेश्वर के बीच का मामला है।

परमेश्वर पहले से ही अपनी योजना में है, लेंस को व्यापक बनाना और इस्राएल के परिवार से बाहर के लोगों को बुलाना। हमारे पास मसीहा के वंश में एक रूत है, जो मोआब के खेतों से एक महिला है, जो सीधे मृत सागर के पूर्व में है, जो मसीहाई परिवार में आती है, जो ओबेद नामक एक बच्चे को जन्म देती है, जो जेसी को जन्म देती है, जो डेविड को जन्म देती है। हमारे पास यह पुस्तक है, और इसका तात्कालिक उद्देश्य यह दर्शाता है कि परमेश्वर वास्तव में इस्राएल को लेबर गोइम, यानी राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश के रूप में बुला रहा था।

यह यशायाह 49:3 और 6 में यशायाह की भाषा का उपयोग करना है। इस्राएल को राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश, या अन्यजातियों के लिए एक प्रकाश होने के लिए बुलाया गया था। एक आदेश जो बाद में चर्च को दिया गया। इस्राएल को यह बुलावा सबसे पहले मिला था।

प्रेरितों के काम 13:47 बताता है कि कैसे कलीसिया अब राष्ट्रों के लिए एक ज्योति बनने के इस आह्वान में आती है। और यद्यपि चुनाव और वाचा एक विशेष लोगों के साथ स्थापित की गई थी, इस्राएल के लिए परमेश्वर का मिशन, योना की इच्छाओं के विपरीत, वह एक आदर्श देशभक्त व्यक्ति था जो अपने पूर्व में उस घृणास्पद राष्ट्र के लिए कुछ भी अच्छा नहीं देना चाहता था जो अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन कर रहा था और भूमध्य सागर के किनारे रहने वाले लोगों के प्रवर्तक बनने के लिए अंदर आने की धमकी दे रहा था। तो, यहाँ हम जो पाते हैं वह यह है कि परमेश्वर के इरादे कभी भी इतने संकीर्ण नहीं थे, कभी भी अनन्यवादी होने का इरादा नहीं था, एक ही राष्ट्र पर केंद्रित नहीं था।

और इसलिए, मुझे लगता है कि इस पुस्तक को हमारे कैनन में शामिल करने का एक मुख्य कारण यह दिखाना है कि ईश्वर का प्रेम पूरी धरती को अपने में समाहित करता है, और यहाँ तक कि ईश्वर के अपने भविष्यद्वक्ता भी इसे स्वीकार करने में धीमे थे। या सुसमाचार की पंक्ति क्या है? यह कैसे होता है? मेरे पास भेड़ें हैं जो इस झुंड की नहीं हैं। और हममें से अधिकांश आज यहाँ कक्षा में इसलिए हैं क्योंकि अब्राहम का परिवार विस्तृत हो गया था।

हम अब्राहम के परिवार के विस्तारित संस्करण का हिस्सा हैं क्योंकि वाचा परमेश्वर की दया से विस्तृत हुई क्योंकि लोग उसके पास विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ बाइबल के संदेश के प्रति प्रतिक्रिया करने के लिए आए थे। इसलिए, सभी लोगों, पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर की दया है। और आप इस बहुत ही भयभीत दुश्मन के बारे में परमेश्वर की दया को देख सकते हैं।

मुझे लगता है कि हम जो अमेरिका में रहते हैं, हमें बहुत सावधान रहना चाहिए कि हम दुनिया के दूसरे लोगों के प्रति अपनी करुणा कभी न खोएँ। हम उनके विचारों से और दूसरे लोगों के लिए उनकी कुछ भयानक धमकियों से नफरत कर सकते हैं, और फिर भी हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर प्यार करता है, जिनकी वह परवाह करता है, और वह चाहता है कि वे उसके प्यार से छुए जाएँ। और इसीलिए हमारे पास यह किताब है और पुराने नियम में नैतिकता अंतरराष्ट्रीय है।

जब हम इस पाठ्यक्रम में आमोस के पहले दो अध्यायों का अध्ययन करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि इस्राएल के आस-पास के सभी राष्ट्रों को उनकी नैतिकता और नैतिकता की कमी और लोगों के साथ उनके व्यवहार के लिए न्याय किया जा रहा है। बाइबल में एक नैतिकता अंतर्निहित है जिसे परमेश्वर ने पूरी पृथ्वी के लिए बनाया है। सभी लोगों को अपने पापों का पश्चाताप करना चाहिए और उनकी कृपा प्राप्त करनी चाहिए।

और परमेश्वर का प्रेम सीमाओं, जातीय सीमाओं को पार कर जाता है। इसलिए, प्रेम का भविष्यसूचक संदेश इस्राएल के अधर्मी शत्रुओं तक अवश्य पहुंचना चाहिए। और योना के अंत में शब्दों का उपयोग करें, तो नीनवे के लोग ही नहीं, बल्कि उनके जानवर भी, जो समुदाय का हिस्सा थे, इस पूरी बात से प्रभावित हुए।

वे ईश्वर की चिंता की वस्तुएँ हैं। ईसाई धर्म ने मिशनों का आविष्कार नहीं किया। वास्तव में, यदि आप मैथ्यू के सुसमाचार को पढ़ते हैं, तो वह यहूदियों का संकेत देता है जो दूसरे के साथ संपर्क बनाने के लिए पूरे भूमध्य सागर को पार कर जाते थे।

एक धर्मांतरित व्यक्ति, सैमुअल सैंडमेल कहते हैं कि प्रारंभिक चर्च बहुत मिशनरी मानसिकता वाला था, क्योंकि यहूदी धर्म में पहले से ही बहुत मजबूत मिशनरी आवेग पाया गया था। और यरूशलेम से शुरू करके सामरिया जाने, दुनिया के सबसे बाहरी हिस्सों में जाने की धारणा कोई नई बात नहीं थी। और जब नवजात मसीहाई समुदाय को ऐसा करने के लिए बुलाया गया, तो यहूदी धर्म ने पहले ही बर्फ तोड़ दी थी।

ला'ओर गोइम बनना था, राष्ट्रों के लिए एक प्रकाश। और यह पहले से ही हो रहा था। अब, पुस्तक का दूसरा उद्देश्य है।

और यह...हाँ, आगे बढ़ो। खैर, यह एक बढ़िया सवाल है: उन्होंने आज क्यों रोक दिया है? आज उन्होंने जो रोक लगाई है उसका कारण यह है कि मध्यकालीन काल के अंत से लगभग दो शताब्दी पहले, 1200 के दशक के दौरान, चर्च ने एक बयान जारी किया था कि जो कोई भी ईसाइयों के पीछे पड़ने के इस मामले में शामिल पाया जाएगा, उसकी संपत्ति जब्त कर ली जाएगी, और उन्हें उन पर लगाए गए बहुत कठोर दंड भुगतने होंगे।

इसलिए, यहूदी लोगों ने मुख्य रूप से इस धारणा को त्याग दिया क्योंकि वे बड़े, उद्धरण, ईसाई दुनिया में अल्पसंख्यक थे। और यह वास्तव में आर्थिक दबाव और शारीरिक खतरे थे। आज भी, यदि आप किसी यहूदी व्यक्ति से पूछें कि मिशन के बारे में उनकी सोच क्या है, तो उनमें से अधिकांश आपको बताएंगे कि मिशन हिंसा, घृणा, लोगों की इच्छाओं के विरुद्ध बल प्रयोग और बहुसंख्यक धर्म द्वारा एक अलग धर्म से जुड़ा हुआ है।

और इसीलिए हम मिशनों के खिलाफ हैं क्योंकि इसे हिंसा, दूसरे लोगों पर साम्राज्यवादी कब्ज़ा और उन पर कानून लागू करने के बराबर माना जाता है। इसलिए, वे शेटल या यहूदी बस्ती में समाप्त हो जाते हैं। शेटल शब्द, जबकि हम यहूदी समुदाय में इसका इस्तेमाल करते हैं, खास तौर पर मध्यकालीन काल के दौरान और आधुनिक काल में, एक जर्मन शब्द से आया है जिसका मतलब है छोटा शहर, शेटल।

और यही यहूदियों के साथ हुआ। उन्हें परिसरों में रखा गया और कुछ नागरिक अधिकारों और मानवाधिकारों से वंचित किया गया। और यहूदियों को मेजबान आबादी द्वारा बाहर निकाल दिया गया।

इसलिए, यहूदी धर्म ने इस विचार को पीछे छोड़ दिया। आधुनिक दुनिया में इस विचार को पुनर्जीवित करने के लिए दो या तीन प्रयास हुए हैं, कम से कम मेरे जीवनकाल में, जिसके बारे में मैं जानता हूँ, और मैं कई रब्बियों को जानता हूँ। सुधार आंदोलन के लिए इसका प्रभारी एक व्यक्ति है, जिसने शहरों में वाचनालय खोलने, साहित्य उपलब्ध कराने का आह्वान किया, ताकि उन लोगों पर न चला जाए जो पहले से ही किसी अन्य धर्म से जुड़े हुए हैं, बल्कि उन करोड़ों लोगों पर चला जाए जो इससे जुड़े नहीं हैं, खासकर अमेरिका में, जिनका किसी धर्म से कोई लगाव नहीं है।

और अलेक्जेंडर शिंडलर भी इसी से जुड़े थे। अब, जल्दी से, मैं दूसरे उद्देश्य, क्राइस्टोलॉजिकल पर आता हूँ। मुझे लगता है कि यह विशेष पुस्तक में एक दूर का उद्देश्य था।

आप कभी नहीं जानते कि पवित्र आत्मा क्या करने जा रहा है और पवित्र आत्मा कैसे काम करने जा रहा है। लेकिन परमेश्वर के उद्देश्य में, यीशु, और प्रतीकात्मकता के उपयोग के माध्यम से, यीशु कब्र में अपने स्वयं के दफन और मृत्यु के चंगुल से अपनी रिहाई की ओर इशारा करते हैं। वह अपने स्वयं के छुटकारे की गतिविधि के मूल के उदाहरण के रूप में मछली के अंदर से योना के समानांतर दफन की ओर इशारा करता है।

यह मसीहियों के लिए उनके प्रभु की मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान का एक नाटकीय भविष्यसूचक चित्रण बन जाता है। और फिर, मत्ती 12:40 में यही कहा गया है, इस मिट्टाश में, यदि आप चाहें तो, उस विशेष कहानी पर यह व्याख्यात्मक व्याख्या। जैसे योना तीन दिन और तीन रात बड़ी मछली के पेट में था, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के हृदय में रहेगा।

एक दूसरे का एक प्रकार है। यह इसे दर्शाता है। तो, योना दूसरे का एक प्रकार है।

और मसीह के बारे में। लेकिन मसीह, जो कुछ भी करता है, वह हमेशा पुराने नियम की घटनाओं या परिस्थितियों से बड़ा होता है। और जबकि व्यक्तिगत रूप से, मैं खुद, इस बारे में बहुत रूढ़िवादी हूँ कि किसी को किस तरह से प्रकारों का उपयोग करना चाहिए, नए नियम के लेखक, यूहन्ना 3:14, 15, 16, 17 और 18 पढ़ें।

जैसे जंगल में साँप को ऊपर उठाया गया था, वैसे ही मनुष्य के पुत्र को भी क्रूस पर चढ़ाया जाना चाहिए। और इसलिए एक खंभे पर लटका हुआ वह पीतल का साँप जिसकी ओर लोग देखते थे और तब जीवित रहते थे जब उन्हें घातक विष से साँप ने डस लिया था। इसलिए, एक बड़ा अर्थ यह है कि जब लोग ऊपर देखते हैं, तो वे तब जीवित रह सकते हैं जब उन्हें किसी की मृत्यु के कारण मृत्यु के दंश से काट लिया गया हो।

और उस मृत्यु के माध्यम से, जहाँ एक व्यक्ति को क्रूस पर चढ़ाया गया था, उन लोगों को जीवन मिलता है जो इसे देखते हैं। वे उस उपचार को प्राप्त करते हैं। एक हमेशा दूसरे से बड़ा होता है।

एक दूसरे की तस्वीर है। और इसलिए मुझे लगता है कि परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए, हमारे पास यीशु की मृत्यु, दफ़न और पुनरुत्थान का यह चित्र है। और फिर आखिरी बात जो मैं आज कहना चाहूँगा वह है मत्ती 12:39 में योना का संकेत। फिर से मत्ती 16:4 में, योना का संकेत क्या है? योना का संकेत यीशु का उपदेश है जिसने लोगों को पश्चाताप करने के लिए बुलाया।

उपदेश ने कब्र के चंगुल से उनके चमत्कारिक रूप से बच निकलने के माध्यम से पूर्ण अधिकार और सर्वोच्च प्रमाण प्रदान किया। यही संकेत है, मसीह का उपदेश, जिसने लोगों को राज्य में लाया। इसलिए, योना का संकेत यीशु का संकेत है और यह संकेत है कि परमेश्वर जीवित है, लोगों को अपने पास बुला रहा है, और यह, एक उल्लेखनीय तरीके से, यीशु को परमेश्वर की उसी शक्ति के लिए प्रमाणित करता है जिसने भविष्यवक्ता योना के माध्यम से काम किया था, अब यीशु में जीवित है।

वास्तव में, मुझे लगता है कि योना की पुस्तक पुराने नियम की बहुत ही आश्चर्यजनक छोटी पुस्तकों में से एक है जो यीशु के बारे में कुछ विश्वसनीयता प्रदान करती है। क्योंकि पुराने नियम में यहोवा के लिए जिम्मेदार ये सभी चमत्कार, तूफान लाना, तूफान को शांत करना, प्रकृति के चमत्कार, पौधे, पुराने नियम में सुसमाचारों में, यह यहोवा ही था जिसने ये सब किया। इसलिए, नए नियम में, यीशु का प्रकृति पर नियंत्रण है, तूफान को शांत करना, रोटी और मछलियों का बढ़ना, इत्यादि।

तो, यहोवा जो करता है और अब नासरत के यीशु में जो करता है, उसके बीच एक बहुत ही मजबूत संबंध है।

यह डॉ. मार्व विल्सन द्वारा भविष्यद्वक्ताओं पर दी गई शिक्षा है। यह योना की पुस्तक पर सत्र 8 है।